जैनत्व संस्कार

भाग-1

1. प्रातः सदा ही सूर्योदय से पूर्व उत्साह पूर्वक उठो।
2. उठते ही पंचपरमेष्ठी का विनयपूर्वक स्मरण करो।
3. विचार करो, मैं चेतन हूँ, देह नहीं हूँ। सिद्धों के समान ज्ञान और आनन्द ही मेरा स्वरूप है॥
4. स्नान आदि करके नित्य जिन-दर्शन करो।
5. जूठन न छोड़ो, अनजान, अपाच्य व अभक्ष्य पदार्थ न खाओ।
6. किसी की चुगली व निन्दा न करो। कठोर, अप्रिय व निंद्य वचन न बोलो।
7. बड़ों की विनय करो, सब बड़ों के सामने शिष्टाचार से वर्तन करो।
8. वस्त्र, पुस्तकें व घर की प्रत्येक वस्तु नियत स्थान पर रखो।
9. दरवाजा, नल, लाईट व पंखा खुला न छोड़ो। समय, स्वास्थ्य व सम्पत्ति का सदुपयोग करो।
10. अपने सुख के लिए कभी किसी को कष्ट न दो।
11. अपने दोषों को दूर करने के लिए महापुरुषों को अपने जीवन का आदर्श बनाओ।
12. नौकरों एवं जानवरों से प्रेमपूर्वक बर्ताव करो।

अभिवादन में जयजिनेन्द्र ही बोलें

जैनत्व जागरण संस्कार शिविर, बकस्वाहा
के अवसर पर प्रकाशित

जैनत्व संस्कार

भाग-1

संकलन एवं संपादन
पण्डित संतोष शास्त्री, बकस्वाहा
जैनदर्शनाचार्य

प्रकाशक
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन,
बकस्वाहा (म.प्र.)

प्रथम संस्करण : **1 हजार प्रतियाँ**
(19 अक्टूबर 2009)
द्वितीय संस्करण : **1 हजार प्रतियाँ**
(6 नवम्बर 2010, दीपावली)

मूल्य : **स्वाध्याय**

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	प्रार्थना	1
2.	णमोकार महामंत्र	2
3.	चार मंगल	4
4.	तीर्थंकर	7
5.	देव-दर्शन	10
6.	सदाचार	13
7.	कषाय	16
8.	पाप	18
9.	अमूल्य तत्त्व विचार	20
10.	ज्ञाता-दृष्टा राही हूँ	21
11.	पूछूँ तुमसे एक सवाल	22
12.	Very Sweet	22
13.	गुड्डू एक लड्डू को पाकर	23
14.	आओ जानें (वन-टू-टेन)	23
15.	मेरा धाम	24
16.	ज्ञानी ध्यानी का सबका कहना है	25
17.	मंदिरजी में घण्टा बाजे टन...	26
18.	चाहे अंधियारा हो....	27
19.	उठें सबके कदम...	28
20.	जयघोष	30

मुद्रक :
देशना कम्प्यूटर्स, जयपुर
मोबा. 9928517346

प्रार्थना

देव-गुरु को वंदन करते,
जिनवाणी माँ को नमस्कार।
पंच प्रभु के पथ पर चलकर,
हो जावें हम भव से पार॥
मंगलमय अरहंतदेव हैं,
सिद्ध प्रभु हैं मंगलमय।
साधु हमारे हैं मंगलमय,
जैन धर्म है मंगलमय॥
प्रभु अरहंत लोक में उत्तम,
सिद्ध प्रभु हैं सर्वोत्तम।
गुरु वीतरागी उत्तम हैं,
केवलि कथित धर्म उत्तम॥
श्री अरहंत शरण में जाऊँ,
सिद्ध प्रभु की शरण गहो।
परम दिगम्बर मुनि शरण हैं,
जैनधर्म ही शरण अहो।

पाठ-1

णमोकार महामंत्र

णमो अरहंताणं

लोक में सब अरहंतों को नमस्कार हो

णमो सिद्धाणं

लोक में सब सिद्धों को नमस्कार हो

णमो आइरियाणं

लोक में सब आचार्यों को नमस्कार हो

णमो उवज्झायाणं

लोक में सब उपाध्यायों को नमस्कार हो।

णमो लोए सव्वसाहूणं

लोक में सब साधुओं को नमस्कार हो।

णमोकार मंत्र की महिमा

ऐसो पंचणमोयारो

यह पंच नमस्कार मंत्र

सव्वपावप्पणासणो

सब पापों का नाश करने वाला है।

मंगलाणं च सव्वेसिं

सब मंगलों में पहला मंगल है।

पढमं होहि मंगलम

प्रत्येक शुभ कार्य करने से पहले अवश्य पढ़ना चाहिए

मंत्र स्मरण से लाभ

यह मंत्र मोह-राग-द्वेष का अभाव करने वाला और सम्यग्ज्ञान प्राप्त कराने वाला है।

णमोकार मंत्र का परिचय

- ❖ णमोकार मंत्र में पाँचों परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है
- ❖ णमोकार मंत्र में 5 पद, 35 अक्षर, 58 मात्रायें हैं
- ❖ णमोकार मंत्र प्राकृत भाषा में आर्या छंद में लिखा गया है।
- ❖ णमोकार मंत्र को किसी ने नहीं बनाया, यह अनादि-निधन मंत्र है
- ❖ णमोकार मंत्र को सर्वप्रथम आचार्य पुष्पदन्त भूतबलि ने षटखण्डागम ग्रंथ के मंगलाचरण रूप में लिखा है।

परमेष्ठी

जो परम पद में स्थित होते हैं, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।

परमेष्ठी पाँच होते हैं -

1. अरहंत परमेष्ठी, 2. सिद्ध परमेष्ठी, 3. आचार्य परमेष्ठी, 4. उपाध्याय परमेष्ठी, 5. साधु परमेष्ठी।

जो जीव इन पाँचों परमेष्ठियों को पहिचान कर उनके बताये हुए मार्ग पर चलता है, उसे सच्चा सुख प्राप्त होता है।

हमें प्रतिदिन प्रातः उठने के बाद और सोने के पहले णमोकार मंत्र अवश्य पढ़ना चाहिए।

पाठ-2

चार मंगल

** मंगल*

चत्तारि मंगलं

लोक में चार मंगल हैं

अरहंता मंगलं

अरहंत भगवान मंगल हैं

सिद्धा मंगलं

सिद्ध भगवान मंगल हैं

साहू मंगलं

साधु (आचार्य, उपाध्याय, साधु) मंगल हैं।

केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं

केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग धर्म मंगल है।

जो मोह-राग-द्वेषरूपी पापों को गलावे और सच्चा सुख उत्पन्न करे उसे मंगल कहते हैं।

अरहंतादि स्वयं मंगलमय हैं और उनको भक्तिभावपूर्वक स्मरण करने से परम मंगल होता है।

** उत्तम*

चत्तारि लोगुत्तमा

लोक में चार उत्तम हैं

अरहंता लोगुत्तमा

अरहंत भगवान उत्तम हैं

सिद्धा लोगुत्तमा

सिद्ध भगवान उत्तम हैं

साहू लोगुत्तमा

साधु (आचार्य, उपाध्याय, साधु) उत्तम हैं

केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो

केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग धर्म उत्तम है

जो लोक में सबसे महान हो, उसे उत्तम कहते हैं।

लोक में ये चारों ही सबसे महान हैं, अतः उत्तम हैं। इनकी महानता किसी पद या बाह्य स्वरूप से नहीं अपितु वीतरागता से है।

** शरण*

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि

मैं चारों की शरण में जाता हूँ

अरहंते सरणं पव्वज्जामि

अरहंत भगवान की शरण में जाता हूँ

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि

सिद्ध भगवान की शरण में जाता हूँ

साहू सरणं पव्वज्जामि

साधु (आचार्य, उपाध्याय, साधु) की शरण में जाता हूँ

केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि

केवली भगवान द्वारा बताये गये वीतरागधर्म की शरण में जाता हूँ

शरण सहारे को कहते हैं।

यहाँ सहारे का अर्थ यह नहीं है कि भगवान हमारी सहायता, धन आदि देकर करते हैं, अपितु वे हमें सच्चे सुख का मार्ग बताते हैं।

पंच परमेष्ठी द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा की शरण लेना ही पंचपरमेष्ठी की सच्ची शरण है।

जो व्यक्ति पंचपरमेष्ठी की शरण लेता है, उसका संसार परिभ्रमण रूप दुःख मिट जाता है। ---

---

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र

सुबह उठे मम्मी से बोले हम, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र।
पापा से भी सुबह बोलें हम, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र॥
दादा से दादी से बोले हम, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र।
दीदी से भैया से बोले हम, जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र॥
चावल ले मंदिर में आये, पण्डितजी को देखकर बोले हम,
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र।
पुस्तक ले पाठशाला आये, दीदी जी को देख के बोले हम,
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र।

पाठ-3

तीर्थंकर भगवान

जो धर्म तीर्थ (मुक्ति का मार्ग) का उपदेश देते हैं, समवशरण आदि विभूति से युक्त होते हैं और जिनको तीर्थंकर नामकर्म नाम के महापुण्य का उदय होता है, उन्हें तीर्थंकर कहते हैं।

एक युग में तीर्थंकर 24 होते हैं -

क्र.	नाम	चिन्ह
1.	ऋषभदेव	बैल
2.	अजितनाथ	हाथी
3.	संभवनाथ	घोड़ा
4.	अभिनंदननाथ	बंदर
5.	सुमतिनाथ	चकवा
6.	पद्मप्रभ	श्वेतकमल
7.	सुपार्श्वनाथ	साथिया/स्वास्तिक
8.	चंद्रप्रभ	चंद्रमा
9.	पुष्पदंत	मगर
10.	शीतलनाथ	कल्पवृक्ष
11.	श्रेयांसनाथ	गेड़ा
12.	वासुपूज्य	भैंसा

13.	विमलनाथ	सूकर
14.	अनंतनाथ	सेही
15.	धर्मनाथ	वज्रदंड
16.	शान्तिनाथ	हिरण
17.	कुन्थुनाथ	बकरा
18.	अरनाथ	मछली
19.	मल्लिनाथ	कलश
20.	मुनिसुव्रतनाथ	कछुआ
21.	नमिनाथ	नील कमल
22.	नेमिनाथ	शंख
23.	पार्श्वनाथ	सर्प
24.	महावीर	सिंह

अनेक नाम वाले तीर्थंकर

1. ऋषभदेव को ऋषभनाथ, आदिनाथ, वृषभदेव भी कहतेहैं।

2. पुष्पदन्त को सुविधिनाथ भी कहते हैं।

3. महावीर को वर्द्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति भी कहते हैं।

जैनधर्म में और भी अनेक महापुरुषों के नाम पाये जाते हैं।

जो मोक्ष गये हैं, वे सभी भगवान हैं, जैसे भरत, बाहुबली आदि।

भगवान

जो वीतरागी और सर्वज्ञ होते हैं, उन्हें भगवान कहते हैं।

तीर्थंकर और भगवान में निम्न अंतर है –

1. सभी तीर्थंकर भगवान होते हैं, पर सभी भगवान तीर्थंकर नहीं होते।

2. तीर्थंकर 24 होते हैं, भगवान अनंत होते हैं।

3. तीर्थंकर के कल्याणक होते हैं, भगवान के कल्याणक नहीं होते।

4. तीर्थंकर का समवशरण होता है, भगवान का समवशरण नहीं होता।

5. तीर्थंकर के चिन्ह होते हैं, भगवान के चिन्ह नहीं होते।

इन तीर्थंकरों के नामों को हम एक छन्द के माध्यम से सरलता से याद रख सकते हैं।

ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन,
सुमति, पद्म, सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन,
वासुपूज्य पूजित सुरराय,
विमल अनंत धर्म जस उज्ज्वल
शान्ति कुंथु अर मल्लि मनाय,
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु
वर्द्धमान पद पुष्प चढाय।

इनके जानने से क्या लाभ है ?

तीर्थंकर के उपदेश को समझकर, उस पर चलने से हम सब भी भगवान बन सकते हैं।

पाठ-4

देव-दर्शन

हम सभी जैन हैं, हमारे आराध्य जिनेन्द्र भगवान हैं।

प्रायः सभी जैन मंदिर जाते हैं, परन्तु क्यों जाना चाहिए? कैसे जाना चाहिए ? क्या करना चाहिए ? और जो हम बोलते हैं, उसका क्या अर्थ है ? देवदर्शन की विधि क्या है ? इन सब बातों को जाने बिना हम देवदर्शन के पूर्व फल को प्राप्त नहीं कर सकते, इसलिए हमें देव-दर्शन संबंधी संपूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

प्रश्न - मंदिर क्यों जाना चाहिए ?

उत्तर - हमें भगवान के समान बनने के लिए अर्थात् उनके समान गुणों की प्राप्ति के लिए मंदिर जाना चाहिए।

प्रश्न - मंदिर कैसे जाना चाहिए ?

उत्तर - 1. हमें नहा-धोकर शुद्ध वस्त्र पहनकर मंदिर जी जाना चाहिए।

2. मंदिर जी में चमड़े से बनी वस्तुएँ नहीं ले जानी चाहिए।

3. मंदिर जी में खाने-पीने की वस्तुएँ नहीं ले जानी

चाहिए।

4. मंदिरजी में घर-गृहस्थी की बातें नहीं करनी चाहिए।

5. जूते-चप्पल बाहर उतार कर हाथ-पैर धोकर ही मंदिर जी में प्रवेश करना चाहिए।

6. मंदिरजी में मोबाईल का उपयोग नहीं करना चाहिए।

देवदर्शन की विधि

भगवान की जय-जयकार करते हुए तथा तीन बार नि:सहि नि:सहि नि:सहि बोलते हुए मंदिरजी में प्रवेश करना चाहिए।

नि:सहि का अर्थ है सर्व सांसारिक कार्यों (लड़ाई-झगड़े, खेल, घर-गृहस्थी-व्यापार-परस्पर राग-द्वेष आदि) का निषेध।

उसके बाद भगवान की वेदी के सामने ऊँ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु बोलना चाहिए (नमोस्तु का अर्थ है नमस्कार हो)

उसके बाद णमोकार मंत्र एवं चत्तारि मंगल पाठ आदि बोलते हुए जिनेन्द्र भगवान को अष्टांग नमस्कार करना चाहिए। (स्त्रियों को गवाशन में नमस्कार करना चाहिए)

इसके बाद मन को एकाग्र करके भगवान की स्तुति पढ़ते हुए हाथ जोड़कर तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए।

प्रश्न – हम तीन प्रदक्षिणा क्यों लगाते हैं ?

उत्तर – अनादि से अब तक हम तीनों लोकों एवं चार गति चौरासी लाख योनियों में परिभ्रमण करते आये हैं, अतः हम चारों ओर से तीन प्रदक्षिणा लगाते हुए भावना भाते हैं कि इस संसार परिभ्रमण का अभाव हो और रत्नत्रय की प्राप्ति हो इसलिए प्रभु हम आपकी प्रदक्षिणा लगा रहे हैं।

प्रदक्षिणा लगाने के बाद फिर भगवान को नमस्कार कर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ते हुए कायोत्सर्ग करना चाहिए।

इस प्रकार मन को एकाग्र करके शान्तिपूर्वक भगवान के दर्शन करना चाहिए।

ध्यान रखें कि हमें गंधोदक मात्र मस्तिष्क पर ही लगाना चाहिए क्योंकि वही हमारा उत्तम अंग है।

प्रश्न – गंधोदक क्यों लगाते हैं ?

उत्तर – गंधोदक मस्तिष्क पर लगाते हुए हमारी भावना होती है कि हे जिनेन्द्र देव आपके द्वारा बताया गया जैनधर्म हमें शिरोधार्य है।

उसके बाद शान्ति से बैठकर शास्त्र स्वाध्याय करना चाहिए।

यदि मंदिरजी में उस समय प्रवचन हो रहा हो तो वह सुनना चाहिए अथवा स्वयं का स्वाध्याय करना चाहिए एवं जो पढ़ा हो अथवा सुना हो उसे थोड़ी देर बैठकर मनन करना चाहिए कि मैं कौन हूँ ? मेरा क्या स्वरूप है ? एवं मैं भगवान कैसे बन

पाठ-5

सदाचार

हम सभी जैन हैं और जैन प्राचीन काल से ही सदाचारी माने जाते हैं। सामान्य जनों से भी अगर जैनों के बारे में पूछते हैं तो वे यही कहते हैं कि जैन रात्रि भोजन नहीं करते, आलू-प्याज आदि अभक्ष्य भक्षण नहीं करते, अपितु पानी छानकर पीते हैं, इसलिए कहा भी जाता है -

महावीर कह गये सभी से, जैनी वह कहलायेगा।
दिन में भोजन, छान के पानी, नित्य जिनालय जायेगा॥

रात्रि भोजन करने से हानियाँ

हम जैन हैं, हमें तो परम्परा से ही मुनिराजों ने व विद्वानों ने यह बात सिखाई है कि हमें रात में भोजन नहीं करना चाहिए, इससे अनेक हानियाँ हैं -

1. जैनधर्म के अनुसार रात्रि भोजन करने से, मांस खाने के बराबर पाप लगता है।

2. रात्रि भोजन करने में गृद्धता अधिक होने से तीव्र पाप बंध होता है।

3. दिन में सूर्य का प्रकाश होने से सूक्ष्म जीव व अनेक वैक्टेरिया उत्पन्न नहीं हो पाते, परन्तु रात्रि में अनेक सूक्ष्म जीव और वैक्टेरिया उत्पन्न हो जाते हैं, जो हमारे भोजन के साथ पेट

में चले जाते हैं, जिससे पेट की अनेक प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं।

4. भोजन को पचाने के लिए विटामिन डी की आवश्यकता होती है और विटामिन डी, सूर्य के प्रकाश से प्राप्त होता है। रात में सूर्य नहीं होने से हमें विटामिन डी प्राप्त नहीं होता, जिससे भोजन पच नहीं पाता और लीवर की अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं।

5. वैज्ञानिकों के अनुसार हमें सोने के कम से कम चार घंटे पहले भोजन कर लेना चाहिए, अन्यथा भोजन ठीक से पच नहीं पाता और गैस, मोटापा आदि अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं।

6. जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा-भंग करने का महान दोष लगता है।

रात्रि भोजन त्याग से लाभ

1. रात्रि भोजन त्याग से हम रात्रि भोजन के पाप से बच जाते हैं।

2. रात्रि भोजन त्याग से परिणामों में सरलता आती है।

3. रात्रि भोजन त्याग से पेट की अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है।

4. रात्रि भोजन त्याग करने वाले को एक साल में 6 माह के उपवास का फल प्राप्त होता है।

5. सच्चा जैनी पना प्रकट होता है।

अनछने पानी का त्याग

जैनधर्म के अनुसार बिना छने पानी की एक बूँद में असंख्यात जीव होते हैं और वैज्ञानिकों के अनुसार बिना छने पानी की एक बूँद में 36450 जीव होते हैं। बिना छने पानी में अनेक त्रस जीव भी होते हैं, अत: जो बिना छना पानी पीता है, उसे अनेक त्रस-स्थावर जीवों के घात का पाप लगता है।

बिना छना पानी दूषित होता है, क्योंकि उसमें मिट्टी होती है और मिट्टी के कणों के साथ अनेक रसायन भी होते हैं, जो शरीर को हानिकारक है। अत: बिना छना पानी पीने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं।

हैजा, टाइफाइड आदि बीमारियाँ गंदे पानी से ही फैलती हैं, अत: बिना छने पानी पीने वालों को इन बीमारियों की संभावना अधिक होती है।

अत: हमें हमेशा पीने एवं स्नान आदि सभी कार्यों में छने जल का ही प्रयोग करना चाहिए, इससे अनंत पाप से बच जायेंगे और स्वस्थ भी रहेंगे।

पढ़ेंगे लिखेंगे

पढ़ेंगे लिखेंगे करेंगे अच्छा काम।
धर्म में भी हम करेंगे ऊँचा नाम॥
सुबह जल्दी उठना और करना आतम ध्यान।
पंच परमेष्ठी को करना प्रणाम॥

पाठ-6

कषाय

जो आत्मा को कसे अर्थात् दुख दे उसे कषाय कहते हैं। कषायें चार प्रकार की होती हैं।

1. क्रोध, 2. मान, 3. माया, 4. लोभ।

क्रोध - गुस्से के क्रोध कहते हैं।

जब कोई हमारे प्रतिकूल (विरुद्ध) कार्य करता है तो क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोधी जीव मरकर नरकादि गति प्राप्त करते हैं।

मान - घमण्ड को मान कहते हैं।

दुनियाँ में जो वस्तुएँ हैं, वे मेरी हैं - ऐसा मानकर उनका स्वामी बनता है तो मान उत्पन्न होता है। मानी जीव स्थावर पर्याय प्राप्त करते हैं।

माया - छल-कपट को माया कहते हैं।

छल-कपट, लोभी जीवों के बहुत होता है। मायाचारी जीव के मन में कुछ होता है, वह कहता कुछ और है और कार्य कुछ और ही करता है। मायाचारी मरकर तिर्यंच गति में जाते हैं।

लोभ - लालच को लोभ कहते हैं।

यह सबसे खतरनाक कषाय है, इसे तो पाप का बाप कहा जाता है, लोभी जीव किसी भी चीज को देखकर उसे प्राप्त करना

चाहता है।

आत्मा का स्वभाव जानना-देखना है। क्रोधादि करना नहीं।

ये चारों ही कषायें आत्मा के विभाव भाव हैं।

आत्मा के स्वभाव के विपरीत भाव को विभाव कहते हैं।

मिथ्यात्व, राग-द्वेष आत्मस्वभाव के विपरीत है, इसलिए ये विभाव हैं।

राग - जब हम किसी को भला जानकर चाहने लगते हैं तो वह राग कहलाता है।

द्वेष - जब हम किसी को बुरा जानकर दूर करना चाहते हैं, वह द्वेष कहलाता है।

ये मिथ्यात्व, राग-द्वेष (कषायें) आत्मा को अनादि से दु:ख देती आ रही हैं।

जब हम मिथ्यात्व (उल्टी मान्यता) के कारण परपदार्थों को अच्छा या बुरा मानते हैं तो कषायें उत्पन्न होती हैं।

जब हम जिनवाणी के अभ्यास से परपदार्थों को अच्छा या बुरा मानना छोड़ देते हैं तो कषायें उत्पन्न ही नहीं होती।

हम सभी संसार के दु:ख से छूटना चाहते हैं, इसलिए हमें

क्रोध करने का मतलब है, दूसरे की गलती की सजा अपने को देना।

पाठ-7

पाप

जीव जगत में जितने दु:ख पाता है, वह सब उसके पापों का ही फल है।

दु:ख का कारण बुरा कार्य ही पाप है।

पाप पाँच होते हैं -

हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह।

हिंसा - आत्मा में जो मोह-राग-द्वेष उत्पन्न होते हैं, वह भावहिंसा है और दूसरों को मारना-सताना और उनका दिल दुखाना द्रव्यहिंसा है।

झूठ - जैसा देखा, जाना और सुना हो, वैसा ही न कहकर अन्यथा कहना झूठ है। बिना सोचे-समझे जैसा देखा-जाना-सुना हो, वैसा कहना सत्य नहीं है। जैसे कोई अज्ञानी हिंसा में धर्म कहे उसे वैसे ही कहने से हिंसा में धर्म नहीं हो पाता, अत: सत्य बोलने से पहले सत्य को समझना आवश्यक है।

ऐसा मजाक जिससे दूसरे का अहित हो वह भी झूठ है। चुगली और निंदा से भी झूठ का पाप लगता है।

चोरी - किसी की पड़ी हुई, रखी हुई वस्तु को उसकी बिना आज्ञा के उठा लेना या उठाकर किसी को दे देना चोरी है (द्रव्यचोरी) किन्तु यदि दूसरे की वस्तु नहीं भी उठाये लेकिन उठाने का भाव मात्र हो तो भी भाव चोरी है।

कुशील – पराई माँ–बहिन को बुरी निगाह से देखना द्रव्य कुशील है और मन में बुरे परिणाम रखना भाव कुशील है।

परिग्रह – अनाप–शनाप रुपया–पैसा जोड़ना, जोड़ने का भाव तथा उनके प्रति राग रखना परिग्रह है।

लोक में लोभ को पाप का बाप कहते हैं। यद्यपि पाँच पापों में उसका नाम नहीं आता तो भी लोभ के वश होकर जीव घोर पाप करता है। इसलिए उसे पाप का बाप कहते हैं, परन्तु सबसे बड़ा पाप मिथ्यात्व है, क्योंकि मिथ्यात्व के नाश के बिना संसार परिभ्रमण नहीं छूटता।

मिथ्यात्व उल्टी मान्यता को कहते हैं और सबसे बड़ा पाप अपनी आत्मा को पहिचान लेने से एक समय में नष्ट हो जाता है, अतः हमें शीघ्र ही अपने आत्मा को पहिचान कर अपना कल्याण करना चाहिए।

सीख

मम्मी बेटा साथ चले, हाथ में लेकर हाथ चले।
चलते–चलते हुआ है क्या ? रास्ते में काँटा चुभा॥
बेटा जोर से रोया, माँ ने उसे मनाया।
काँटा तो यह गंदा है, तू तो राजा बेटा है।।
बेटा जब चुप हो गया, फिर अपने में खो गया।
तब माँ समझा कर बोली, बहन को देते तुम गाली।।
उसी पाप का फल मिला, इसीलिए काँटा चुभा।
मेरी बात मान लो तुम, गाली देना छोड़ो तुम॥
बेटा बोला अच्छा माँ, अब गाली न दूँगा माँ॥

अमूल्य तत्त्व विचार

(हरिगीतिका)

बहु पुण्य-पुंज प्रसंग से, शुभ देह मानव का मिला।
तो भी अरे! भवचक्र का, फेरा न एक कभी टला ॥1॥
सुख-प्राप्ति हेतु प्रयत्न करते, सुख जाता दूर है।
तू क्यों भयंकर भाव-मरण, प्रवाह में चकचूर है ॥2॥
लक्ष्मी बढ़ी अधिकार भी, पर बढ़ गया क्या बोलिये।
परिवार और कुटुम्ब है क्या? वृद्धि नय पर तोलिये ॥3॥
संसार का बढ़ना अरे! नर देह की यह हार है।
नहिं एक क्षण तुझको अरे! इसका विवेक विचार है ॥3॥
निर्दोष सुख निर्दोष आनन्द, लो जहाँ भी प्राप्त हो।
यह दिव्य अन्तस्तत्व जिससे, बन्धनों से मुक्त हो ॥5॥
पर वस्तु में मूर्छित न हो, इसकी रहे मुझको दया।
वह सुख सदा ही त्याज्य रे ! पश्चात् जिसके दुख भरा ॥6॥
मैं कौन हूँ आया कहाँ से, और मेरा रूप क्या?
संबंध दुखमय कौन है? स्वीकृत करूँ परिहार क्या ॥7॥
इसका विचार विवेक पूर्वक, शान्त होकर कीजिए।
तो सर्व आत्मिक ज्ञान के, सिद्धान्त का रस पीजिए ॥8॥
किसका वचन उस तत्त्व की, उपलब्धि में शिवभूत है।
निर्दोष नर का वचन रे! यह स्वानुभूति प्रसूत है ॥9॥
तारो अरे तारो निजात्मा, शीघ्र अनुभव कीजिए।
सर्वात्म में समदृष्टि दो, यह वच हृदय लख लीजिए ॥10॥

ज्ञाता-दृष्टा राही हूँ

ज्ञाता-दृष्टा राही हूँ,
अतुल सुखों का ग्राही हूँ।
बोलो मेरे संग आनंद घन,
आनंद घन, आनंद घन॥

आत्मा में रमूँगा मैं क्षण-क्षण में,
चाहे मेरा ज्ञान जाये निज पर में।
अपने को जाने बिना लूँगा नहीं दम,
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।।
सुख में दु:ख में, दु:ख में सुख में,
एक राह पर चल
ज्ञाता-दृष्टा राही हूँ.....

धूप हो या गर्मी बरसात हो जहाँ,
अनुभव की धारा बहाऊँगा वहाँ।
अपने को जाने बिना लूँगा नहीं दम,
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।
ज्ञाता-दृष्टा राही हूँ.....

पूछूँ तुमसे एक सवाल

पूछूँ तुमसे एक सवाल, झट-पट उत्तर दो गोपाल।
आतम कितना गोरा है या फिर कितना काला है॥
आतम का बोलो आकार चौढ़ा है या गोलाकार।
हमें आँख से दिखता क्या, आतम की आँखें हैं क्या ?
कितने बड़े हैं उसके हाथ या फिर कितने होते पाँव।
पानी में गलता है क्या, अग्नि में जलता है क्या॥
क्या शस्त्रों से कटता है, क्या हवा में उड़ता है।
आतम का भोजन है क्या, निज आतम का रंग है क्या॥
जन्मे कब मेरा आतम, मरता कब मेरा आतम।
किये आपने प्रश्न अनेक, इन सबका उत्तर है एक॥
आतम सदा अरूपी है, दिखता पुद्गल रूपी है।
अजर अमर मेरा आतम, सिद्ध प्रभु सा परमातम॥
सात तत्त्व का सार है एक, जानो अपना आतम नेक॥

Very Sweet Jain Dharam

Very Sweet, Very Sweet
Jain Dharam
I Love I Love Jain Dharam
I Shall go on Mokshmarg
I Shall take my Jain Dharam
Very Sweet, Very Sweet
Do not take any tension
Always says my Jain Dharam
Very Sweet, Very Sweet
You can solve any problem
Very Sweet, Very Sweet

गुड्डू एक लड्डू को पाकर

गुड्डू एक लड्डू को पाकर,
रोने लगा कोने में जाकर।
मेरा लड्डू छोटा भाई,
बड़ा मिले तो खाऊँ भाई॥

तब तक सबने लड्डू खाया,
कोने में एक बिच्छू आया॥
डंक लगा तो रोया गुड्डू,
चूहे खा गये उसका लड्डू॥

तब गुड्डू ने सौगन्ध खाई,
हठ न करेंगे कभी भी भाई।
हम सब ने भी सौगन्ध खाई,
हठ न करेंगे कभी भी भाई॥

आओ जानें (वन-टू-टेन)

वन वन वन	–	सम्यग्ज्ञानी बन
टू टू टू	–	धर्म को छू (जान)
थ्री थ्री थ्री	–	पापों से हो जाओ फ्री
फोर फोर फोर	–	चलें मोक्ष की ओर
फाइव फाइव फाइव	–	संयममय हो लाईफ
सिक्स सिक्स सिक्स	–	पाठशाला का टाइम फिक्स
सेवन सेवन सेवन	–	जैनधर्म ए-वन
एट एट एट	–	खोले मोक्ष का गेट
नाइन नाइन नाइन	–	गुरु हमारे फाइन
टेन टेन टेन	–	हम बनेंगे सच्चे जैन

मेरा धाम....

शुद्धातम है मेरा नाम,
मात्र जानना मेरा काम।
मुक्तिपुरी है मेरा धाम,
मिलता जहाँ पूर्ण विश्राम।।

जहाँ भूख का नाम नहीं,
जहाँ प्यास का काम नहीं है।
खांसी और जुखाम नहीं है,
आधि-व्याधि का नाम नहीं है।।

सत् शिव सुन्दर मेरा धाम,
शुद्धातम है मेरा नाम।
मात्र जानना मेरा काम।।1।।

स्व-पर भेदविज्ञान करेंगे,
निज आतम का ध्यान धरेंगे।
राग-द्वेष का त्याग करेंगे,
चिदानन्द रस पान करेंगे।।

सब सुखदाता मेरा धाम,
शुद्धातम है मेरा नाम।
मात्र जानना मेरा काम।।2।।

ज्ञानी का ध्यानी का सबका कहना है

ज्ञानी का ध्यानी का सबका कहना है
एक आत्मा ही सच्चा गहना है
सोना चाँदी पुद्गल की सेना है ॥टेक॥

पर को अपना माने यही है तेरी भूल
रम जा निज में चेतन खिलेंगे समकित फूल
संयम की साधना से ही रहना है
ज्ञानी का ध्यानी का.....

आलू जो खाते हैं वो बन जाते भालू
चाकलेट जो चूसते हैं वो बन जाते चालू
नरक गति की वो यात्रो कर आते
ज्ञानी का ध्यानी का.....

जीवन के दु:खों से जो डरते नहीं हैं
ऐसे ज्ञानी बच्चे कभी रोते नहीं हैं
सुख की है चाह तो दु:ख भी सहना है।
एक आत्मा ही.....

सत्य अहिंसा सदाचारमय जीवन जिसका है,
देव-शास्त्र-गुरु की वाणी पर श्रद्धा रखता है।
मोक्ष महल की सीढ़ी पर चढ़ जाता है
एक आत्मा ही एक आत्मा ही.....

मंदिरजी में घण्टा बाजे टन....

मंदिरजी में जायेंगे, पूजा रचायेंगे
पूजा रचायेंगे, स्वाध्याय करेंगे
कौन ? ऽऽऽ
हम तुम हम.....-2

मंदिरजी जायेंगे, पूजन करायेंगे
पापा को लायेंगे, मम्मी को लायेंगे,
कौन ? ऽऽऽ
हम तुम हम.....-2

मंदिरजी जायेंगे, स्वाध्याय करायेंगे
दादा को लायेंगे, दादी को लायेंगे,
कौन ? ऽऽऽ
हम तुम हम.....-2

मंदिरजी जायेंगे, भक्ति करायेंगे
भैया को लायेंगे, भाभी को लायेंगे,
कौन ? ऽऽऽ
हम तुम हम.....-2

चेतन राजा कैसा है ?

चेतन राजा कैसा है ? सिद्ध प्रभु के जैसा है।
चेतन राजा क्या करता ? मात्र जानता देखता॥
क्यों घूमें संसार में, भव-भव की मंझधार में।
चेतन तो खुद को भूला, पर को देख के यह फूला॥
चेतन जब खुद को जाने, अपने में ही सुख माने।
सब दुःख संकट दूर करे, मोक्ष महल की सैर करे॥

चाहे अंधियारा हो.....

चाहे अंधियारा हो, या दूर किनारा हो,
आवाज हमें देना, हम दौड़े आएँगे ॥1 ॥

चाहे गरमी सरदी हो,
या बिजली चमकती हो
आवाज हमें देना,
हम दौड़े आयेंगे ॥2 ॥ चाहें अंधियारा...

हम मंदिर जायेंगे, हम पूजा रचायेंगे,
जिनवाणी सुनने को, हम दौड़े आयेंगे ॥3 ॥ चाहे अंधियारा..

हम शिविर लगायेंगे,
अज्ञान नशायेंगे,
जिनवणी पढ़ने को,
हम दौड़े आयेंगे ॥4 ॥ चाहे अंधियारा...

हम मुनि बन जायेंगे, निज ध्यान लगायेंगे,
आवाज नहीं देना, हम कभी नहीं आयेंगे ॥5 ॥चाहे...

हम मुक्ति पायेंगे
हम सिद्ध बन जायेंगे,
अवाज नहीं देना,
हम कभी नहीं आयेंगे ॥6 ॥चाहे.....

उठें सबके कदम...

उठें सबके कदम.....
उठें सबके कदम मंदिर की तरफ
जिनवाणी को ही पढ़ते रहें,

कभी ज्ञान, कभी ध्यान-2
कभी ध्यान, कभी ज्ञान
कभी तत्त्वों की चर्चा करें....।उठे सबके॥

मेरे प्यारे-प्यारे पापा
मेरे अच्छे अच्छे पापा

कभी तीरथ ले जाया करो
कभी माँगी कभी तुंगी
कभी तुंगी कभी माँगी
कभी शिखरजी ले जाया करो....।उठे सबके॥

मेरी प्यारी-प्यारी मम्मी
मेरी अच्छी-अच्छी मम्मी

रोज स्वाध्याय किया करो
कभी समय, कभी नियम
कभी नियम, कभी समय
कभी प्रवचनसार पढ़ा करो....।उठे सबके॥

मेरी प्यादी-प्यारी दादी
मेरी अच्छी-अच्छी दादी

रोज मंदिर को जाया करो
कभी पूजा, कभी भक्ति
कभी प्रवचन सुना करो.....।उठे सबके॥

मेरे अच्छे-अच्छे दादा
मेरे प्यारे-प्यारे दादा

कभी प्रवचन सुना करो
कभी मुनि, कभी श्रावक
कभी श्रावक, कभी मुनि
कभी दोनों को दान करो....।उठे सबके॥

मेरे अच्छे-अच्छे भैया
मेरे प्यारे-प्यारे भैया

रोज पाठशाला जाया करो
कभी ढाल, कभी भाग
कभी भाग, कभी ढाल
कभी स्तुति पढ़ा करो.....।उठे सबके॥

मेरी प्यारी-प्यारी बहना
मेरी अच्छी-अच्छी बहना

कभी आलू न खाया करो
इसमें बहुत जीव होते, इसमें त्रस जीव होते
इन्हें कभी मत खाया करो.....।उठे सबके॥

जयघोष

ज्ञाता दृष्टा आत्मा – बन जाओ परमात्मा
वस्तु स्वभाव धर्म है – राग-द्वेष अधर्म हैं।
जिनवाणी ने क्या दिया – निज स्वरूप बता दिया
पुण्य-पाप तो कर्म है – वीतरागता धर्म है
गुरु के पथ पर बढ़ना है – सम्यग्ज्ञानी होना है
मात-पिता का आदर हो – संस्कारों का सागर हो वहाँ
जिनवाणी को सुनना है – हित अहित समझना है
कंद-मूल में फंसी जिंदगी – कैसे सुनेंगे प्रभु की धुनी
सदाचार यदि पाना है – भक्ष्य-अभक्ष्य समझना है
महावीर का नाम जहाँ – सुख सामग्री मिले वहाँ
जिसका कर्ता जो ही है – नहीं माने वह मोही है
जड़ चेतन में भेद जहाँ – सच्चा मुक्ति मार्ग वहाँ
महावीर को ध्यायेंगे – परमेष्ठी पद पायेंगे
तीर्थंकर की महिमा गाओ – जैनधर्म की शान बढ़ाओ
सिद्धारथ त्रिशला के लाल – जीवों को कर गये निहाल
1,2,3,4 – जैनधर्म की जय-जयकार
5,6,7,8 – जैनधर्म का देखो ठाठ
9,10,11,12 – जैनधर्म का बजे नगारा
13,14,15,16 – जैनधर्म का बच्चा बोला
17,18,19,20 – जैनधर्म की हो गई जीत
21,22,23,24 – जैनधर्म के तीर्थंकर चौबीस
महावीर का क्या संदेश – जिओ और जीने दो
संडे हो या मंडे – कभी न खाओ अंडे
तन-मन-करता कौन खराब – अण्डा, मछली और शराब

भगवान महावीर की शिक्षाएँ

1 सभी आत्मायें बराबर हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

2. भगवान कोई अलग नहीं होते। जो जीव पुरुषार्थ करे, वही भगवान बन सकता है।

3. भगवान जगत की किसी भी वस्तु का कर्ता-हर्ता नहीं है, मात्र जानता ही है।

4. हमारी आत्मा का स्वभाव भी जानना-देखना है, कषाय आदि करना नहीं है।

5. कभी किसी का दिल दुखाने का भाव मत करो।

6. झूठ बोलना और झूठ बोलने का भाव करना पाप है।

7. चोरी करना और चोरी करने का भाव करना बुरा काम है।

8. संयम से रहो, क्रोध से दूर रहो और अभिमानी न बनो।

9. छल-कपट करना और भावों में कुटिलता रखना बहुत बुरी बात है।

10. लोभी व्यक्ति सदा दुःखी रहता है।

11. हम अपनी ही गलती से दुःखी हैं और अपनी भूल सुधार कर सुखी हो सकते हैं।

त्रिमूर्ति जैन मन्दिर, बकस्वाहा

श्री मुनिसुव्रतनाथ दि. जैन मन्दिर, बकस्वाहा

भगवान महावीर

1. सभी आत्माएं
मानी है।
2. भगवान कोई अव
करे, वही भगवान बन
3. भगवान बनने
कभी-कभी
4. इनसे आत्मा का
है, कर्मों अ
5. कभी किसी को
करो।
6. झूठ बोलना और
पाप है।
7. चोरी करना और
काम है।
8. संयम से रहो, क्रोध से
करो।
9. छल-कपट करना
बहुत बुरा पाप है।
10. लोभी व्यक्ति सदा दुःख
11. हम आत्मा की
सूक्ष्म

प्रभु के

पूर्वक उपसर्ग पूर्व से

है। हूँ

जीवों के

[redacted]